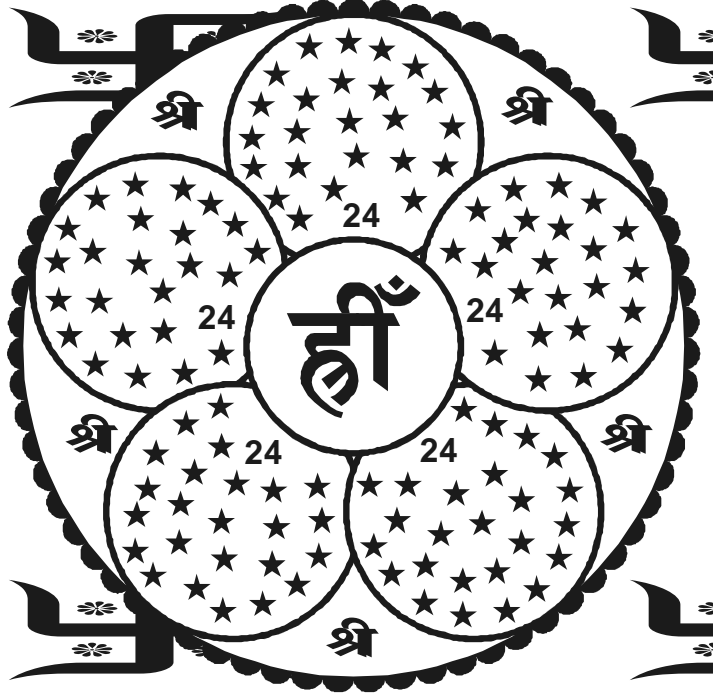


ॐ वीतरागाय नमः ॐ

विशद श्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विधान पूजन माण्डना



रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

- कृति - विशद श्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विधान पूजन
- कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
- संस्करण - प्रथम, 2008
- प्रतियाँ - 1000
- संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज एवं
ब्र. सुखनन्दनजी,
- संपादन - ब्र. ज्योति दीदी आस्था दीदी, सपना दीदी
- संयोजन - किरण, आरती दीदी
- प्राप्ति स्थल - 1.
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.)
फोन : 07581-274244
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566
- मूल्य - 21/- रु. मात्र

अपनी बात

पूजा कर शुभ भाव से, कर ले निज कल्याण।

पूजा कर मिलते विशद, सार्थक मोक्ष स्थान॥

जो भव्य जिनेन्द्र भगवान की पूजा भक्ति में मन, वचन, काय की एकता रखता है, वह भक्त प्रभु भक्ति के प्रसाद से लौकिक सुखों के साथ स्वर्ग और मोक्षरूपी सच्चे सुख को प्राप्त करता है। इसी प्रकार आचार्यश्री विशदसागरजी महाराज ने भव्यों को सच्चे सुख के आलम्बन हेतु पंचकल्याणक विधान की रचना अत्यन्त सरल भाषा में की है।

पूज्य आचार्यश्री 108 विरागसागरजी महाराज ने पूज्य आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज को ऐलक दीक्षा एवं मुनिदीक्षा प्रदान की तथा प.पू. आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज के निर्देशन से परम पूज्य मर्यादा शिष्योत्तम आचार्यश्री भरतसागरजी महाराज ने मालपुरा, जिला-टोंक की धरा पर सुयोग्य देख तथा साथ में रहने वाले ब्रह्मचारियों को देख उन्हें भी कल्याण पथ पर अग्रेषित करवाने हेतु बसंत पंचमी, 13 फरवरी, 2005 के शुभ दिन संस्कार किए। आचार्य पद के बाद नव आचार्यश्री ने ब्रह्मचारी बन्दी भैया (जयपुर निवासी) को 108 मुनिश्री विशालसागरजी, ब्रह्मचारी केसरीजी खानियाधाना को क्षुल्लक श्री 105 विबुद्धसागर एवं ब्रह्मचारी दिनेश शिवपुरी को क्षुल्लक श्री 105 विगुणसागरजी के नाम से तीन दीक्षाएँ प्रदान कीं।

मुनिश्री विशदसागरजी महाराज ने आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज के आशीर्वाद से इन्होंने धर्म की महती प्रभावना की। मध्यप्रदेश के सागर, जिला-दमोह में प्रथम पंचकल्याणक मुनिश्री के सान्निध्य में हुआ। उसके बाद बरौदिया, जिला-सागर, मध्यप्रदेश में फिर राजस्थान पहुँचने पर आचार्यश्री के सान्निध्य में जयपुर, टोंक, अजमेर, अलवर आदि जिलों में ग्रामों में विहार कर जिन मंदिरों में विशाल स्तर पर पंचकल्याणक एवं वेदी प्रतिष्ठाएँ, मंदिर के शिलान्यास, संत भवन के शिलान्यास व बड़े-बड़े पूजन विधान ससंघ सान्निध्य में सम्पन्न कराए।

आचार्यश्री के माध्यम से अभी तक लगभग 25 पूजन विधानों की रचना की जा चुकी है। जिसका माध्यम प्राप्त कर श्रावक भक्ति में विभोर हो असीम पुण्य का संचय कर रहे हैं।

पं. विमलजी बनेठा के माध्यम से पंचकल्याणक विधान की रचना पंवालिया पंचकल्याणक के समय निवेदन किया गया और यह विधान तैयार हो आपके समक्ष यहाँ तैयार है। इसमें 24 तीर्थंकरों के पाँचों कल्याणकों का वर्णन है। यह विधान व्रत, उद्यापन की तिथियों पर भी कर सकते हैं।

ऐसे ज्ञान प्रवर आचार्यश्री के चरणों में भक्ति युत नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

- मुनि विशालसागर (संघस्थ)

परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्यश्री 108 विशदसागरजी महाराज के सानिध्य में 2005 से भव्य पंचकल्याणक एवं वेदी प्रतिष्ठाएँ सम्पन्न हुईं

1. श्री दिगम्बर जैन मंदिर मुहाना, सांगानेर
2. श्री दिगम्बर जैन नशियाँ, टोंक
3. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, विद्याधर नगर, जयपुर
4. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, गायत्री नगर, जयपुर
5. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, राजावत फार्म, मानसरोवर, जयपुर
6. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बैनाड़, जयपुर
7. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, झोटवाड़ा, जयपुर
8. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, चौमूँ, सीकर रोड़, जयपुर
9. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, राजावास, सीकर रोड़, जयपुर
10. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, चित्रकूट कॉलोनी, सांगानेर
11. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, विराटनगर, जयपुर
12. श्री दिगम्बर जैन मंदिर ग्राम पंवालिया, सांगानेर, जयपुर
13. श्री दिगम्बर जैन मंदिर ग्राम श्योपुर, प्रताप नगर, जयपुर
14. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, वरूण पथ, मानसरोवर, जयपुर
15. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
16. श्री दिगम्बर जैन मंदिर बधीचन्दजी, जौहरी बाजार, जयपुर
17. श्री दिगम्बर जैन मंदिर कालान, चौकड़ी मोदी खाना, जयपुर
18. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, अम्बाबाड़ी, जयपुर
19. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, सेक्टर-5, प्रताप नगर, जयपुर
20. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, जय-जवान कॉलोनी, टोंक रोड़, जयपुर
21. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, सिद्धार्थ नगर रोड़, जगतपुरा, जयपुर
22. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, सूर्य नगर, तारों की कूट, जयपुर
23. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, ग्राम बस्सी, जिला-जयपुर
24. श्री दिगम्बर जैन मंदिर ग्राम चैनपुरा, जिला-जयपुर
25. श्री दिगम्बर जैन मंदिर टोड़ारायसिंह, जिला-टोंक

इसके पूर्व श्री दिगम्बर जैन मंदिर सगरा, मध्यप्रदेश एवं बरौदिया में पंचकल्याणक एवं अनेक स्थानों पर वेदी प्रतिष्ठा, विधानादि के द्वारा धर्म-प्रभावना हुई।

आगामी पंचकल्याणकद्वारा श्री दि.जैन मंदिर श्योपुर-मध्यप्रदेश, श्री दि.जैन मंदिर उनियारा, जि.-टोंक, श्री आदिनाथ दि.जैन मंदिर मालपुरा, जि.-टोंक, श्री दि.जैन नसियां दुद्ध, जयपुर

श्री देव-शास्त्र-गुरु समुच्चय पूजन

स्थापना

श्री देव शास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीष झुकाते हैं।
जिन कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में वश एक सहारा है।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन ।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ ! शरण में आये हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
यह परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधि प्रदान करो।
यह अक्षत लाए चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
अब काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले लाए॥
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट पूर्ण न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए॥

श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।

हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।

अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए॥

श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।

हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।

अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए॥

श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।

हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।

अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए॥

श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।

हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।

वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं॥

श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।

हम विद्यमान श्री बीस तीर्थकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्योः श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।

बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थ अनन्त॥

छन्द तोटक

जय अरि नाशक अरिहन्त जिनं, श्री जिनवर छियालीस मूल गुणं।

जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं॥

जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।

जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं॥1॥

जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।

जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं॥

जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।

जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव॥2॥

श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।

जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी॥

है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।

जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल॥ 3॥

जय रत्नत्रय युत गुरुवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूर परं।

जय गुप्ति समीती शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं॥

गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम बह्य विहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो॥4॥
जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध सिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं॥
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं॥5॥
जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं॥
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें॥6॥
जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी॥
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनको यश मंगल गावत हैं॥7॥

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरु जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्योः श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तान्त
श्री सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्तये
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक तिहुँ काल के, नमू सर्व अरहंत।

अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थकर जिनेन्द्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

कायोत्सर्ग कुरु...

श्री तीर्थकर पंचकल्याणक पूजा विधान

स्तवन

पंच कल्याणक प्राप्त कर, बनते हैं अरहंत।

सर्व कर्म को नाश वह, बनें सिद्ध भगवन्त॥

तीर्थकर प्रकृति के धारी, प्राणी होते मंगलकार।
स्वर्ग-नरक इन दो गतियों से, ही चयकर होता अवतार॥
रत्नवृष्टि कर इन्द्र नगर को, सज्जित करते अपरम्पार।
गर्भ का शोधन करें देवियाँ, भक्ति से बोलें जयकार॥1॥

पाण्डुक शिला पे जन्मोत्सव पर, इन्द्र करें अभिषेक महान्।
नृत्यगान करते हैं अनुपम, भाव सहित करते गुणगान॥
जन्म कल्याण की बेला का, वर्णन करना शक्य नहीं।
सूर्य को रोशन करने की क्या, जुगुनू में है शक्ति कहीं॥2॥

जग के सारे भोग भोगकर, उनमें न होते अनुरक्त।
पाके कोई निमित्त क्षुद्र सा, होते जग से पूर्ण विरक्त॥
संयम धारण कर लेते फिर, हो जाते हैं जो अविकार।
रत्नत्रय के धारी जिनको, वंदन मेरा बारंबार॥3॥

ज्ञानावरण आदि चउ घाती, कर देते हैं पूर्ण विनाश।
अनंत चतुष्टय प्रगटित होते, होता केवलज्ञान प्रकाश॥
केवलज्ञान की महिमा बन्धु, सर्व जगत् में अपरम्पार।
अर्हत् पद के धारी जिनको, वंदन मेरा बारम्बार॥4॥

करके योग निरोध अंत में, सर्व कर्म का करते नाश।
मोक्ष प्राप्त कर लेते भगवन्, होता सिद्ध शिला पर वास॥
अक्षय अविनाशी अखण्ड पद, को पा लेते हैं भगवान।
विशद भाव से वंदन करके, करते हम जिन का गुणगान॥5॥

श्री तीर्थंकर पंचकल्याणक समुच्चय पूजन

स्थापना (शंभु छन्द)

गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, पञ्च कल्याणक कहलाते ।
तीर्थंकर प्रकृति के बंधक, श्रेष्ठ पुरुष इनको पाते ॥
विशद भाव से यही प्रार्थना, हो जाए मेरा कल्याण ।
अतः हृदय में कल्याणक का, भाव सहित करते आह्वान ।
पंच कल्याणक हमें प्राप्त हों, मन के मेरे भाव रहे ।
जब तक मोक्ष प्राप्त न होवे, समता की शुभ धार बहे ॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त सर्वमंगलकारी श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर
अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त सर्वलोकोत्तम श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ
ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त सर्वजगत्शरण श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम्
सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

वीर छंद

काल अनादि से कीन्हा है, मैंने अब तक जन्म-मरण ।
नाश हेतु उस जन्म-मरण के, करता हूँ मैं जल अर्पण ॥
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन ।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन ॥1॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव आताप मिटा न मेरा, पर परणति में किया रमण ।
नाश होय संसार वास का, करता मैं चंदन अर्पण ॥
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन ।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन ॥2॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

मिथ्यामति के कारण हमने, सारे जग का किया भ्रमण ।
पद अखण्ड अक्षय पाने को, अक्षत धवल करूँ अर्पण ॥
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन ।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन ॥3॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

चार कषायों में फँसकर के, चतुर्गति में किया गमन ।
कामबाण विध्वंश हेतु यह, पुष्प करूँ पद में अर्पण ॥
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन ।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन ॥4॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच महाव्रत के द्वारा मैं, पंचेन्द्रिय का करूँ दमन ।
क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य सरस करता अर्पण ॥
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन ।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन ॥5॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भेद ज्ञान के द्वारा मैं नित, चित चेतन का करूँ मनन ।
मोह अंध के नाश हेतु यह, जलता दीप करूँ अर्पण ॥
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन ।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन ॥6॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, अष्ट कर्म का करूँ शमन ।
अष्ट कर्म का नाश होय मम्, पावन धूप करूँ अर्पण ॥
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन ।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन ॥7॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज स्वरूप का भान होय शुभ, पर परणति को करूँ वमन ।
मोक्ष महाफल पाने हेतु, फल करता हूँ यह अर्पण ॥
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन ।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन ॥८॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, उसमें ही कर सकूँ रमण ।
पद अनर्घ शाश्वत पाने को, उत्तम अर्घ्य करूँ अर्पण ॥
गर्भ जन्म आदि कल्याणक, पाँचों का करता अर्चन ।
इनको पाने वाले जिन को, करता हूँ शत्-शत् वंदन ॥९॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप्य मन्त्र:- ॐ ह्रीं पंचकल्याणक पदालंकृत श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नमः ।

जयमाला

देहा- पंच कल्याण की रही, महिमा अपरम्पार ।
जयमाला गाते यहाँ, पाने को भव पार ॥

(शम्भू छंद)

तीर्थकर पदवी के धारी, पंच कल्याणक पाते हैं ।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र सभी मिल, उत्सव महत् मनाते हैं ॥
गर्भ कल्याणक होता है जब, उससे भी छह महीने पूर्व ।
गर्भ नगर में रत्नवृष्टि शुभ, मिलकर करते देव अपूर्व ॥
माता सोलह स्वप्न देखती, हर्षित होती अपरम्पार ।
नृप से उनका सुफल जानती, जिससे हो आनंद अपार ॥
नौ महीने या दो सौ सत्तर, दिन का होता गर्भ कल्याण ।
स्वर्ग लोक या प्रथम नरक से, करके आता जीव प्रयाण ॥

जन्म के अतिशय कहे गये दश, इनको पावे जीव महान् ।
इन्द्र भक्ति करते हैं अतिशय, भाव सहित करते गुणगान ॥
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराते, चिह्न देखकर देते नाम ।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, करते बारम्बार प्रणाम ॥
इस जग की माया को लखकर, तज देते हैं उससे राग ।
कारण पाकर कोई एक भी, धारण करते हैं वैराग ॥
परम दिगम्बर मुद्रा धारण, करके जाते वन की ओर ।
आत्मध्यान में लीन होय कर, तप धारण करते हैं घोर ॥
सम्यक् तप की अग्नि से वह, कर्म घातिया करते नाश ।
लोकालोक प्रकाशी अनुपम, करते केवलज्ञान प्रकाश ॥
केवलज्ञानी बनकर सारे, जग को करते ज्ञान प्रदान ।
जिसके द्वारा भव्य जीव सब, जग के करते निज कल्याण ॥
आयु कर्म के साथ अन्य सब, कर्मों का करने को घात ।
आत्मध्यान करते है फिर वह, केवलज्ञानी जिन समुद्घात ॥
अंतर्मुहूर्त मात्र के अन्दर, हो जाता उनका निर्वाण ।
एक समय में श्री जिनेन्द्र का, सिद्ध शिला पर होय प्रयाण ॥
फिर अक्षय अविचल अखण्ड पद, में होता उनका विश्राम ।
ऐसे अनुपम पद पाने को, प्रभु पद करता विशद प्रणाम ॥

देहा- पंच कल्याणक की रही, महिमा अगम अपार ।
भव्य जीव वह प्राप्त कर, होते भव से पार ॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

देहा- हो जाए कल्याण, सर्व दुःखी संसार से ।
पाकर केवलज्ञान, सिद्ध शिला पर वास हो ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

तीर्थकर गर्भ कल्याणक पूजन

स्थापना

तीर्थकर प्रकृति के कारण, पुण्य उदय में आए अतीव ।
पाते हैं कल्याण गर्भ का, अतिशयकारी भव्य सजीव ॥
माँ की कुक्षी धन्य किए हैं, चौबीस तीर्थकर भगवान ।
'विशद' हृदय में करते हैं हम, भाव सहित उनका आह्वान ॥
हो जाए कल्याण हमारा, यही भावना भाते नाथ ।
तीन योग से वंदन करके, चरणों झुका रहे हम माथ ॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र अवतर अवतर संवैषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ॥

चाल छंद

भव रोग नशाने आए, जल झारी में भर लाए ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे ॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम सुरभित गंध चढ़ाएँ, भव का संताप नशाएँ ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे ॥2॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम अक्षय पद को पाएँ, शुभ अक्षय सुपद चढ़ाएँ ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे ॥3॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

हम पुष्प चढ़ाएँ भाई, सब काम नाश हो जाई ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे ॥4॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, अरु क्षुधा से मुक्ति पाएँ ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे ॥5॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम घृत के दीप जलाएँ, तम मोह का पूर्ण नशाएँ ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे ॥6॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम आठों कर्म नशाएँ, अग्नि में धूप जलाएँ ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे ॥7॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह श्रीफल चरण चढ़ाएँ, हम मोक्ष महाफल पाएँ ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे ॥8॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अरु पद अनर्घ पा जाएँ ।
जिन मात गर्भ अवतारे, सब बोल रहे जयकारे ॥9॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ्यावली

दोहा- चौबिस जिनवर के चरण, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने सुपद अनर्घ ॥

(अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(काव्य छन्द)

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे ।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे ॥
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी ।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी ॥1॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री ऋषभदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ माह की तिथि अमावस, अजितनाथ लीन्हें अवतार ।
धन्य हुई विजया माताश्री, गृह में हुए मंगलाचार ॥
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ॥2॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को प्रभु, संभव जिन अवतार लिये ।
मात सुसेना के उर आए, जग जन का उपकार किये ॥
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ॥3॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

छठी शुक्ल वैशाख माह का, शुभ दिन आया मंगलकार ।
सिद्धार्थ माँ के उर श्री जिन, अभिनंदन लीन्हें अवतार ॥
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ॥4॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ देवाय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वितीया शुक्ल माह श्रावण की, मात मंगला उर आए ।
सुमतिनाथ की भक्ति में रत, देव सभी मंगल गाए ॥
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ कृष्ण की षष्ठी को, श्री पद्मप्रभु अवतार लिए ।
मात सुसीमा के उर आए, जग में मंगलकार किए ॥
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ॥6॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

शुक्ल पक्ष भादव की षष्ठी, हुई लोक में मंगलकार ।
श्री सुपार्श्व माता वसुन्धरा, के उर आ लीन्हें उपकार ॥
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ॥7॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्ला षष्ठ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ देवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

तिथि पंचमी चैत्र कृष्ण की, गर्भ चन्द्रप्रभु जी धारे ।
चन्द्रपुरी लक्ष्मीमति माता, की कुक्षी में अवतारे ॥
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ॥8॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष की नौमी, काकंदीपुर में भगवान।
पुष्पदंत अवतार लिए हैं, जयमाता के उर में आन॥
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार॥9॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्तदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी आठें शीतल जिन, मात सुनंदा उर धारे।
रत्नवृष्टि करके इन्द्रों ने, बोले प्रभु के जयकारे॥
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार॥10॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ वदी षष्ठी है पावन, विष्णु श्री माता उर आन।
गर्भकल्याण प्राप्त किए शुभ, श्री श्रेयांसनाथ भगवान॥
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार॥11॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

छटवी कृष्ण आषाढ़ की, हुआ गर्भ कल्याण।
सुर-नर करते भाव से, वासुपूज्य गुणगान॥12॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्यदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ वदी दशमी प्रभु, सुश्यामा उर आन।
नगर कम्पिला अवतरे, विमलनाथ भगवान॥13॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतनाथ भगवान का, हुआ गर्भ कल्याण।
एकम् कार्तिक कृष्ण की, जय श्यामा उर आन॥14॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस शुक्ल वैशाख की, मात सुव्रता जान।
जिनके उर में अवतरे, धर्मनाथ भगवान॥15॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला त्रयोदश्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

भादव कृष्णा सप्तमी, हुआ गर्भ कल्याण।
ऐरादेवी मात उर, शांतिनाथ भगवान॥16॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णा सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमती के गर्भ में, कुंथुनाथ भगवान।
सावन दशमी कृष्ण की, पाए गर्भ कल्याण॥17॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन शुक्ला तीज को, अरहनाथ भगवान।
मात मित्रसेना वती, उर अवतारे आन॥18॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथदेवाय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

प्रजावती के गर्भ में, मल्लिनाथ भगवान।
चैत शुक्ल की प्रतिपदा, हुआ गर्भ कल्याण॥19॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथदेवाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

मुनिसुव्रत भगवान का, हुआ गर्भ कल्याण ।

श्रावण कृष्णा दोज को, माँ श्यामा उर आन ॥20 ॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथदेवाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

अश्विन वदी द्वितिया तिथि, नमिनाथ जिनदेव ।

माँ विपुला उर अवतरे, पूजूँ उन्हें सदैव ॥21 ॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथदेवाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

कार्तिक शुक्ला षष्ठमी, नेमिनाथ भगवान

शिवादेवी उर आ बसे, पाए गर्भ कल्याण ॥22 ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला षष्ठ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथदेवाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वितीया कृष्ण वैशाख की, पार्श्वनाथ भगवान ।

वामा माँ उर अवतरे, पाए गर्भ कल्याण ॥23 ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथदेवाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्ठी शुक्ल आषाढ़ की, महावीर भगवान ।

त्रिशला माँ उर अवतरे, जग में हुए महान् ॥24 ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ला षष्ठ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर स्वामिने अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा- पाए गर्भ कल्याण, जिन चौबीस त्रिकाल के ।

हुआ आत्म उत्थान, पार हुए संसार में ॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकसहित श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप्य : ह्रह्म ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक पदालंकृत श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नमः ।

जयमाला

सोरठा- जिन चौबीस त्रिकाल, गर्भ कल्याणक पाए हैं ।

गाएँ हम जयमाल, तीन योग से नमन् कर ॥

(पद्धति छंद)

हैं धन्य-धन्य मातु महान्, जिनवर अवतारे गर्भ आन ।
जिन अष्ट देवियाँ शरण आय, हों धन्य मात की भक्ति पाय ।
सब इन्द्र भक्ति करते महान्, करते मिलकर के नृत्य गान ।
जिनके गुण का है नहीं पार, जिनकी महिमा जग में अपार ।
जो धर्म रूप की रहे खान, जिनके गुण जग में हैं महान् ।
जो शील ज्ञान के रहे कोष, न होते जिनमें कोई दोष ।
जो महाशांति की रहे खान, जय-जय तीर्थकर मात जान ।
जिनमात पाय दर्शन महान्, अन्तर में पाया भेद ज्ञान ।
होता यह जानो चमत्कार, करके आहार न हो निहार ।
हो वीरवती माता महान्, तन होता है अति कांतिमान ।
माता का तन न क्षीण होय, तन व्याधि को भी पूर्ण खोय ।
न मात उदर हो वृद्धिवन्त, हो जाय दोष का पूर्ण अन्त ।
माँ मुक्ति का अधिकार पाय, वह निकट भव्य हो मोक्ष जाय ।
यह पूर्ण पुण्य का सुफल जान, जो गर्भ प्राप्त कीन्हा महान् ।
सुर-नर करते माँ को प्रणाम, हम वन्दन करते सुबह-शाम ।
मन में जागी वश यही चाह, मिल जाय प्रभु की हमें छाँह ।

हम को उस पद का मिले योग, मिट जाय जरादि जन्म रोग।
हम वंदन करते बार-बार, मिल जाए भव का हमें पार।

(छंद-घत्तानंद)

जय-जय जिन ज्ञाता, जग के त्राता, सर्व जगत् मंगलकारी।
जय धर्म प्रदाता, सुख के दाता, मोक्ष महल के अधिकारी॥
ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अर्हन्तों को पूजकर, पाऊँ धर्म अनन्त।
गर्भ कल्याणक प्राप्त कर, करूँ कर्म का अंत॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

तीर्थकर जन्म कल्याणक पूजा

स्थापना

तीर्थकर का जन्म जगत् में, होता मंगलकार महान्।
तीन लोक में खुशियाँ छावें, हर्षित होवे सर्व जहान॥
भक्ति से प्रेरित हो सुरपति, भाव सहित करते गुणगान।
मंगलमय उत्सव होता है, करते हैं उर में आह्वान॥
जन्म कल्याण मना रहे हम, जन्म रोग का होवे नाश।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण का, मम अंतर में होय विकास॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र अवतर अवतर संवैषट् आह्वानं।
ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
सन्निधीकरणं।

(गीता छंद)

जन्मादि के रोगों से, हम चतुर्गति भटकाए हैं।
अब नाश हेतु उन रोगों का, जलधारा देने आए हैं॥
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें॥1॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव का संताप सताता है, हम पार नहीं हो पाए हैं।
भवसागर पार उतरने को, हम शीतल चंदन लाए हैं॥
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

न प्राप्त हुआ है अक्षय पद, पर पद में हम अटकाए हैं।
अब अक्षय पद के भाव लिए, यह अक्षत धोकर लाए हैं॥
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें॥3॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम व्यथा से व्याकुल होकर, भव-भव में अकुलाए हैं।
उस आकुलता के नाश हेतु, शुभ पुष्प चढ़ाने लाए हैं॥
अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।
तीर्थकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें॥4॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधा रोग अतिशय दुष्कर, उससे जग जीव सताए हैं।
अब नाश हेतु नैवेद्य परम, यह शुद्ध बनाकर लाए हैं॥

अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।

तीर्थकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें ॥5॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम मोह महातम में अटके, न राह प्राप्त कर पाए हैं।

उस मोह महातम नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं ॥

अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।

तीर्थकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें ॥6॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्ट कर्म के द्वारा हमने, जग में गोते खाए हैं।

अब अष्ट गंध से युक्त मनोहर, धूप जलाने आए हैं ॥

अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।

तीर्थकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें ॥7॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सभी हुए फल निष्फल जग के, मोक्ष सुफल न पाए हैं।

मोक्ष रहा अक्षय अखण्ड शुभ, वह पद पाने आए हैं ॥

अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।

तीर्थकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें ॥8॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन लोक में भटके लेकिन, पद अनर्घ न पाए हैं।

हम पद अनर्घ को पाने हेतु, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं ॥

अब जन्मोत्सव की पूजा कर, अपने जन्मों का नाश करें।

तीर्थकर प्रकृति पाकर के, आतम स्वरूप में वास करें ॥9॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ्यावली

दोहा-

जन्म कल्याणक प्राप्त हैं, तीर्थकर चौबीस।

पुष्पांजलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश ॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

(शेर छंद)

श्री आदिनाथ जिनवर जी, जन्म पाए हैं।

शुभ चैत वदी नौमी को, हर्ष छाए हैं।

इन्द्रों ने रत्नवृष्टि कर, मोद मनाया।

पाण्डुक शिला पे जाकर, अभिषेक कराया ॥1॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ माघ कृष्ण दशमी है, शुभ कर बड़ी।

श्री अजितनाथ जिनवर के, जन्म की घड़ी ॥

इन्द्रों ने रत्नवृष्टि कर, मोद मनाया।

पाण्डुक शिला पे जाकर, अभिषेक कराया ॥2॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

संभव जिनेन्द्र जन्मे, इस लोक में अहा।

कार्तिक सुदी की पूनम का, दिन शुभम् रहा ॥

इन्द्रों ने रत्नवृष्टि कर, मोद मनाया।

पाण्डुक शिला पे जाकर, अभिषेक कराया ॥3॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अभिनंदन प्रभु का जन्म, बड़ा पुण्यमयी था।
दिन माघ सुदी चौदस का, लोकजयी था॥
इन्द्रों ने रत्नवृष्टि कर, मोद मनाया।
पाण्डुक शिला पे जाकर, अभिषेक कराया॥4॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ जिनवर जी, जन्म पाए हैं।
तिथि चैत सुदी ग्यारस, को हर्ष छाए हैं॥
इन्द्रों ने रत्नवृष्टि कर, मोद मनाया।
पाण्डुक शिला पे जाकर, अभिषेक कराया॥5॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को, पृथ्वी पर नव सुमन खिला।
भूले भटके नर-नारी को, शुभम् एक आधार मिला॥6॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी तिथि को, श्री सुपार्श्व जी जन्म लिए।
सुप्रतिष्ठ नृप माता पृथ्वी, को आकर प्रभु धन्य किए॥7॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि तिथि को, चंद्रप्रभु जी जन्म लिए।
चन्द्रपुरी नृप महासेन गृह, आकर प्रभुजी धन्य किए॥8॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन शुक्ला प्रतिपदा को, जन्में पुष्पदंत भगवान।
नृप सुग्रीव रमा माता के, गृह में हुआ था मंगलगान॥9॥

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदी द्वादशी सुहावन, भद्वलपुर में शीतलनाथ।
मात सुनंदा के गृह जन्मे, जिनके चरण झुकाऊँ माथ॥10॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी तिथि ग्यारस को, पाए जन्म श्रेयांस कुमार।
विमलराज रानी विमला के, गृह में हुआ मंगलाचार॥11॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, जन्मे श्री भगवान।
सुर-नर वंदन कर रहे, वासुपूज्य पद आन॥12॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदी द्वादशी को, विमलनाथ भगवान।
नगर कम्पिला जन्म से, हो गया सर्व महान्॥13॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की द्वादशी, सिंहसेन दरबार।
जन्मे प्रभो अनंत जिन, हुआ मंगलाचार॥14॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी तेरस तिथि, जन्मे धर्म जिनेन्द्र।

करते हैं अभिषेक सब, सुर-नर-इन्द्र-महेन्द्र ॥15॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

(छंट-ताटक)

ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष में, चतुर्दशी है सुखकारी।

शांतिनाथ जिन शांति प्रदायक, जन्म लिए मंगलकारी ॥16॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

एकम् सुदी वैशाख माह में, कुंथुनाथ जी जन्म लिए।

मात सुव्रता से जन्मे प्रभु, हस्तिनागपुर धन्य किए ॥17॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन शुक्ला चतुर्दशी को, भूप सुदर्शन के दरबार।

हस्तिनागपुर अरहनाथ जी, जन्म लिए हैं मंगलकार ॥18॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन शुक्ला ग्यारस को प्रभु, जन्मे मल्लिनाथ भगवान।

प्रजापति माँ कुंभराज के, गृह में हुआ था मंगलगान ॥19॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

दशमी कृष्ण वैशाख सुजान, सुर-नर किए जन्म कल्याण।

नृप सुमित्र के घर में आन, जन्मे मुनिसुव्रत भगवान ॥20॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी कृष्ण आषाढ़ महान्, जन्मे नमिनाथ भगवान।

भूप विजयरथ के गृहद्वार, भारी हुआ मंगलाचार ॥21॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला षष्ठी पाय, जन्मे नेमिनाथ जिनराय।

मात शिवा देवी उर आन, शौरीपुर हो गया महान् ॥22॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला षष्ठ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी चौदस शुभकार, अश्वसेन नृप के दरबार।

वामादेवी के उर आन, जन्मे पार्श्वनाथ भगवान ॥23॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी तेरस मनहार, जग में हुआ मंगलाचार।

माँ त्रिशला सिद्धारथ राज, जन्मे वर्द्धमान जिनराज ॥24॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- हुआ जन्म कल्याण, चौबीसों जिनराज का।

जग में हुए महान्, जिनका वंदन हम करें ॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ह्रह्म ॐ ह्रीं जन्मकल्याणक पदालंकृत श्री चतुर्विंशति
तीर्थकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- महिमा जन्म कल्याण की, कैसे करें बखान।
जयमाला गाते विशद, करते हैं गुणगान॥

वीर छंद

पूर्व भवों में भव्य भावना, सोलहकारण भाते जीव।
तीर्थकर के पादमूल में, प्राप्त करे वह पुण्य अतीव॥
बंध करें तीर्थकर प्रकृति, निकट भव्य हो जाते हैं।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाके, श्रेष्ठ मोक्ष पद पाते हैं॥
तीर्थकर प्रकृति के पहले, किया पुण्य या पाप अतीव।
उसके फल से स्वर्ग नरक में, जाते हैं इस जग के जीव॥
स्वर्ग नरक की आयु पूर्ण हो, उसके भी छह महीने पूर्व।
तीर्थकर प्रकृति उदय हो, तब घटनाएँ होय अपूर्व॥
देव सुरक्षा कवच बनाकर, उसमें रखते हैं मनहार।
पूर्ण सुरक्षा का होता फिर, देवों को पूरा अधिकार॥
जन्म नगर में रत्न वृष्टि फिर, देव करें शुभ अपरंपार।
वातावरण वहाँ का होता, श्रेष्ठ मनोहर मंगलकार॥
देव कुमारिकाएँ आकर के, गर्भ का शोधन करती हैं।
माता के मन को प्रमुदित कर, शुभ भावों से भरती हैं॥
नौ महीने तक गर्भ में रहता, तीर्थकर का जीव महान्।
करते देव अर्चना भक्ति, भाव सहित करते सम्मान॥
सभी नरक के जीवों में भी, अनुपम खुशियाँ छा जावें।
जन्म समय पर सर्वलोक में, क्षण भर को सुख पा जावें॥
इन्द्रों के आसन कंपित हों, वाद्य बजें हो घंटा नाद।
नमन् करें आगे बढ़कर सुर, वहीं से पावें आशीर्वाद॥
ऐरावत लेकर आवें फिर, आवे सभी देव परिवार।
हर्षित होकर नाचे गावें, बोले प्रभु की जय-जयकार॥

पाण्डुक शिला पर ले जाकर के, न्हवन कराते मंगलकार।
चंदन आदि से श्रृंगारित, शची करे फिर बारम्बार॥
मात-पिता परिवार स्वजन सब, हर्षित होते हैं भारी।
जन्म कल्याणक की इस जग में, महिमा होती है न्यारी॥
हम कल्याणक मना रहे हैं, स्व कल्याण मनाने को।
पूजा अर्चा करते भविजन, निज सौभाग्य जगाने को॥

दोहा- अंतिम है यह भावना, हो मेरा कल्याण।
चरण वंदना कर रहे, करने मोक्ष प्रयाण॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भव तारक तव पाद में, झुका रहे हम शीश।
भवदधि तट के पार से, दो हमको आशीष॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

तीर्थकर तप कल्याणक पूजा

स्थापना

ऋषभनाथ आदि तीर्थकर, अंतिम महावीर स्वामी।
तप कल्याणक प्राप्त किए जिन, बने मोक्ष के अनुगामी॥
पञ्च मुष्टि से केशलोंच कर, परम दिगम्बर हुए महान्।
तप कल्याणक की पूजा को, करते हैं प्रभु का आह्वान॥
प्राप्त हमें संयम तप हो प्रभु, यही भावना भाते हैं।
प्रभु चरणों में विशद भाव से, सादर शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र अवतर अवतर संवैषट् आह्वानं।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छंद

हृदय सरवर में सुनिर्मल, नीर भर लाया अहा ।
हो नाश जन्मादि जरा सब, कष्ट जिनसे ही सहा ॥
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो ।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो ॥1॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन सुगन्धित अगुरु पावन, चर्चते चरणों अहा ।
जग में भ्रमण हमने किया भव, ताप के कारण महा ॥
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो ।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो ॥2॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुल अखण्डित धवल मनहर, थाल में भर लाए हैं ।
शुभ प्राप्त अक्षय पद हमें हो, भावना कर आए हैं ॥
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो ।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो ॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

यह पुष्प सुन्दर श्रेष्ठ अनुपम, अर्चना को लाए हैं ।
नाश करने काम बाधा, शान से हम आए हैं ॥
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो ।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो ॥4॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

रस भरे पकवान मनहर, हम चढ़ाने लाए हैं ।
क्षुधा बाधा नाश हो मम, हम शरण में आए हैं ॥

प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो ।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो ॥5॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप घृत के प्रज्ज्वलित हम, भाव से कर लाए हैं ।
मोह का तम नाश करने, हम यहाँ पर आए हैं ॥
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो ।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो ॥6॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप सुरभित अरु सुगंधित, अग्नि में खेते परम ।
कर्म आठों नाश करना, लक्ष्य है अपना चरम ॥
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो ।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो ॥7॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल सरस लेकर अनेकों, हम चढ़ाते हैं अहा ।
भाव से पूजा करें प्रभु, मोक्ष फल पाने महा ॥
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो ।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो ॥8॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्ट द्रव्यों का बनाकर, अर्घ्य देते भाव से ।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमको, भक्ति करते चाव से ॥
प्रभु सुतप की औषधी से, रोग भव का नाश हो ।
है भावना अंतिम यही बस, तव चरण में वास हो ॥9॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा- ऋषभादि चौबीस जिन, पाए तप कल्याण ।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, करते हैं गुणगान ॥
इति मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अष्टक छंद

शुभ चैत वदी नौमी प्रभुवर, वृषभेष तपस्या धार लिए ।
विषयों के बंधन विष सम हैं, इस जग को प्रभु उपदेश दिए ॥1॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

दसमी शुभ माघ वदी पावन, अजितेश तपस्या धारी है ।
इस जग का मोह हटाया है, यह संयम की बलिहारी है ॥2॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

मगसिर सुदी पूर्णमासी को, संभव जिन वैराग्य लिए ।
निज स्वजन और परिजन सारे, वैभव से नाता तोड़ दिए ॥3॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वादशी शुभम् थी माघ सुदी, प्रभु अभिनंदन संयम धारे ।
ले चले पालकी में नर-सुर, वह सब बोले जय-जयकारे ॥4॥
ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

वैशाख सुदी नौमी पावन, श्री सुमतिनाथ दीक्षाधारी ।
श्री शिवसुख देने वाली शुभ, है सर्व जगत् मंगलकारी ॥5॥
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रयोदशी कार्तिक वदी पावन, जग से नाता तोड़ चले ।
श्री पद्मप्रभु स्वजन परिजन धन, सबकी आशा छोड़ चले ॥6॥
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी सुहावन, श्री सुपाश्वर्चनाथ तीर्थेश ।
केशलोंच कर दीक्षा धारे, प्रभु ने धरा दिगम्बर भेष ॥7॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपाश्वर्चनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष कृष्ण एकादशी पावन, चन्द्रप्रभु दीक्षा धारे ।
दीक्षा लिए साथ में कई नृप, देव किए तव जयकारे ॥8॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

अगहन माह शुक्ल की एकम्, दीक्षा धारे जिन तीर्थेश ।
पुष्पदंतजी हुए विरागी, राग रहा न मन में लेश ॥9॥
ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ कृष्ण द्वादशी सुहावन, जिनवर श्री शीतल स्वामी ।
जैन दिगम्बर दीक्षा धारे, बने मोक्ष के अनुगामी ॥10॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

एकादशी फाल्गुन कृष्णा की, श्री श्रेयांसनाथ भगवान ।
राग-द्वेष तज दीक्षा धारे, सर्व लोक में हुए महान् ॥11॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

चतुर्दशी फाल्गुन कृष्णा की, वासुपूज्य जिन दीक्षाधार।

निज आतम का ध्यान लगाया, त्यागे प्रभु पूर्ण आगार ॥12॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(छंद : रोला)

वदि माघ चौथ विमलेश, जिन दीक्षा धारी।

पाए प्रभु सुगुण विशेष, जगत् मंगलकारी ॥

हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।

महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं ॥13॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

बारस वदी ज्येष्ठ महान्, हुए प्रभु अविकारी।

श्री अनंतनाथ भगवान्, बने थे अनगारी ॥

हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।

महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं ॥14॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

तेरस सुदी माघ महान्, प्रभो दीक्षा धारे।

श्री धर्मनाथ भगवान्, बने मुनिवर प्यारे ॥

हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।

महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं ॥15॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

चौदस वदी जेठ, जिनेन्द्र मुनि दीक्षा धारी।

श्री शान्तिनाथ भगवान्, हुए थे अविकारी ॥

हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।

महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं ॥16॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा चतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौपाई

वैशाख सुदी एकम् तिथि पाय, दीक्षा पाए कुंथु जिनाय।

हुए स्वात्म रस में लवलीन, कर्म किए प्रभु क्षण में क्षीण ॥17॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगहन सुदी दशमी जिनराज, धारे प्रभु संयम का ताज।

भेष दिगम्बर धारे नाथ, जिनके चरण झुकाऊँ माथ ॥18॥

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मगसिर सुदी ग्यारस जिनदेव, मल्लिनाथ तप धारे एव।

केशलुंच कर तप को धार, छोड़ दिया सारा आगार ॥19॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशमी वदी वैशाख महान्, पाए प्रभु जी तप कल्याण।

मुनिसुव्रत मुनिपद को धार, राग-द्वेष सब तजे विकार ॥20॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आषाढ़ वदी दशमी को पाय, दीक्षा धारे नमि जिनाय।

अविकारी हो वन में वास, आत्म तत्त्व का किए प्रकाश ॥21॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रावण शुक्ला षष्ठी जान, नेमीश्वर तप धरा महान् ।

पशुओं पर करुणा को धार, हुई विरक्ति अपरम्पार ॥22॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला षष्ठ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

एकादशी पौष की श्याम, पार्श्वनाथ काशी के धाम ।

तप कल्याणक धारे नाथ, जिनके चरण झुकाऊँ माथ ॥23॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

अगहन वदी दशमी जिन वीर, संयमधार बने महावीर ।

वर्धमान सन्मति भी नाम, अतीवीर पद करूँ प्रणाम ॥24॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- तपकल्याणक प्राप्त हैं, चौबीसों जिनराज ।

उनकी पूजा कर रहे, विशद भाव से आज ॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप्य : ह्रीं ॐ ह्रीं तपकल्याण पदालंकृत चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नमः ।

जयमाला

दोहा- पूज्य रहे इस लोक में, जिन तीर्थेश त्रिकाल ।

तप कल्याणक की विशद, गाते हैं जयमाल ॥

शंभु छन्द

पूर्व भवों में सोलह कारण, भव्य भावना भाते हैं ।

तीर्थकर के पादमूल में, बंध प्रकृति का पाते हैं ॥

भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, पञ्च कल्याणक के धारी ।

स्वर्ग-नरक से आने वाले, होते हैं जग उपकारी ॥

गर्भ जन्म कल्याणक पावन, नर सुर भव्य मनाते हैं ।

जन्मभूमि को अतिशयकारी, आकर खूब सजाते हैं ॥

पाकर के युवराज राज्य पद, पाते इन्द्रिय के सुखभोग ।

मिलने पर कोई निमित्त वह, धारण करते हैं शुभ योग ॥

तप कल्याणक के अवसर पर, बैठ पालकी में जाते ।

ब्रह्म ऋषि आकर के तप की, महिमा प्रभु से बतलाते ॥

पञ्च महाव्रत आदि संयम, धारण करते भली प्रकार ।

सुर-नर असुर सभी मिलकर के, बोलें प्रभु की जय-जयकार ॥

पञ्च समीति तीन गुप्तियाँ, का भी पालन करते देव ।

तत्त्वों का चिंतन स्वरूप में, रहते हैं जो लीन सदैव ॥

निर्वाणादि भूतकाल में, चौबीस जिनवर हुए महान् ।

ऋषभादि का वर्तमान में, भाव सहित करते गुणगान ॥

महापद्म आदि भावी जिन, पाते हैं सब तप कल्याण ।

विशद ज्ञान को पाने वाले, सिद्ध शिला पर करें प्रयाण ॥

तप कल्याणक के अवसर पर, यही भावना भाते नाथ ।

हम भी तीर्थकर पद पाएँ, अतः झुकाते चरणों माथ ॥

दोहा- तप कल्याणक प्राप्त कर, करें कर्म की हान ।

शिव पद पाने के लिए करते, विशद विधान ॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- चौबिस जिन त्रिय काल के, पाते तप कल्याण ।

अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, बनते सर्व महान् ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तीर्थंकर आहारदान समय की पूजन

स्थापना

तीर्थंकर तिय काल के, संयम के सरताज ।
मोक्षमार्ग पर बढ़ चले, तारण तरण जहाज ॥
पूजा के हम पूर्व में, करते पद प्रच्छाल ।
भाव सहित वंदन करें, चरणों में नतभाल ॥
वीतरागता है परम, श्री जिन की पहचान ।
हृदय कमल में कर रहे, भाव सहित आह्वान ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्
सन्निधिकरणं ।

दोहा-छंद

जन्म-मृत्यु का नाश हो, पूजा कर हे नाथ !
जल धारा देते चरण, भक्ति भाव के साथ ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव आताप विनाश हो, तव पूजा से नाथ ।
चंदन चर्चित कर रहे, चरण झुकाते माथ ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षय पद हमको मिले, तव पूजा से नाथ ।
चढ़ा रहे अक्षत धवल, भक्ति भाव के साथ ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

(.. जिस तीर्थंकर का पञ्चकल्याणक हो उन तीर्थंकर का नाम बोले)

कामबाण का नाश हो, पूजा कर हे नाथ ! ।

पुष्प समर्पित कर रहे, भक्ति भाव के साथ ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुधा रोग का नाश हो, तव पूजा से नाथ ।

चढ़ा रहे नैवेद्य हम, भक्ति भाव के साथ ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह अंध का नाश हो, मेरा हे भगवान ! ।

दीप जलाते हैं चरण, पाने सम्यक् ज्ञान ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्ट कर्म का नाश हो, मेरा हे भगवान ! ।

धूप जलाते भाव से, पाने सम्यक् ज्ञान ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

परम मोक्षफल प्राप्त हो, हमको हे भगवान ! ।

फल अर्पित करते परम, पाने मोक्ष महान् ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

पद अनर्घ पाने परम, चढ़ा रहे हम अर्घ्य ।

शिवपुर नगरी वास हो, पाके सुपद अनर्घ ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर पदधारी .. मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर पद के धनी, लीन्हें संयम धार ।

गाते हैं जयमालिका, भवदधि पाने पार ॥

चौपाई

तीर्थकर प्रकृति के धारी, सर्व लोक में मंगलकारी ।
जिनकी महिमा को हम गाते, भक्ति भाव से शीश झुकाते ।
जिनका पुण्य उदय में आया, कोई निमित्त जिनवर ने पाया ।
मन में तव वैराग्य समाया, जिनवर ने संयम को पाया ।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हो गये तन-मन से अविकारी ।
प्रभु ने भेष दिगम्बर धारा, देवों ने बोला जयकारा ।
बैठ पालकी में प्रभु आए, सुर-नर जिनकी महिमा गाए ।
प्रभु ने आतम ध्यान लगाया, निज को निज में ही रत पाया ।
मन में चर्या की सुधि आई, निकले चर्या को मुनिराई ।
भूप ने मुनिवर को पड़गाया, निरंतराय आहार कराया ।
विधिदान की सबने जानी, हमें बताती है जिनवाणी ।
पुण्य उदय मेरा अब आया, पावन यह सौभाग्य जगाया ।
दानपात्र द्वय हैं मनहारी, सर्वलोक में मंगलकारी ।

दोहा- धन्य हुआ जीवन मेरा, देकर के सद दान ।
मोक्षमार्ग पर बढ़ चलूँ, हो आतम कल्याण ।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थकर पदधारी .. मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- सकल व्रतों को धारकर, बने दिगम्बर संत ।
तप से कर्म विनाशकर, होवे भव का अंत ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तीर्थकर केवलज्ञानकल्याणक पूजन

स्थापना

तीर्थकर चौबीस त्रिकालिक, तीन लोक में रहे महान् ।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण तप, से पाते हैं केवलज्ञान ॥
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, का हम करते आह्वानन ।
विशदभाव से चरण कमल में, करते हैं शत्-शत् वंदन ।
अब केवलज्ञान प्रकट करके, मेरे अंतर में आ जाओ ।
शुभ दिव्यध्वनि की सरिता में, हमको अवगाहन करवाओ ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक

नीर प्रासुक शुद्ध लेकर, अर्चना को लाए हैं ।
जन्म-मृत्यु नाश हो मम्, प्रार्थना को आए हैं ॥
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा ।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा ॥1॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

गंध निर्मल तव चरण में, चर्चने को लाए हैं ।
हो ताप भव का नाश मेरा, वंदना को आए हैं ॥
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा ।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा ॥2॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोतियों सम धवल अक्षत, कर रहे अर्पित यहाँ।
प्राप्त अक्षत हो सुपद शुभ, है अलौकिक जो महा॥
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा ॥3॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुरभित अरु सुगंधित, हम चढ़ाते हैं यहाँ।
काम की बाधा नशे मम, धर्म घाती है महा॥
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा ॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस शुभ नैवेद्य लेकर, हम चढ़ाने लाए हैं।
क्षुधा व्याधि नाश करने, हम शरण में आए हैं॥
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा ॥5॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह जगमग जलाकर, आरती को लाए हैं।
मोहतम का नाश हो मम, भावना यह भाए हैं॥
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा ॥6॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दशांगी धूप लेकर, हम जलाते हैं यहाँ।
कर्म आठों ने भ्रमण, हमको कराया न कहाँ॥
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा ॥7॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विविध भाँति के सरस फल, हम चढ़ाते हैं यहाँ।
मोक्ष फल हो प्राप्त हमको, है अलौकिक जो महा॥
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा ॥8॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों का मनोहर, अर्घ्य अर्पित कर रहे।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमको, धर्म की सरिता बहे॥
भव भ्रमण का दुःख प्रभु, हमने अनादि से सहा।
मैं ज्ञानकल्याणक मनाऊँ, ज्ञान पाने को अहा ॥9॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा- तीर्थकर चौबीस ने, पाया केवलज्ञान।
भाव सहित वंदन करूँ, पुष्पांजली महान्॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

बेसरी-छंद

एकादशी फाल्गुन वदी जानो, ऋषभनाथ तीर्थकर मानो।
कर्म घातिया आप विनाशे, पावन केवलज्ञान प्रकाशे ॥1॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल एकादशी आई, केवलज्ञान जगाए भाई।
तीर्थकर अजितेश कहाए, सुर-नर वंदन करने आए ॥2॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथ कृष्ण कार्तिक की जानो, संभवनाथ जिनेश्वर मानो ।

केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, सुर-नर वंदन करने आए ॥3॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौदश सुदी पौष की आई, अभिनंदन तीर्थकर भाई ।

पावन केवलज्ञान जगाए, सुर-नर वंदन करने आए ॥4॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत शुक्ल एकादशी जानो, सुमतिनाथ तीर्थकर मानो ।

केवलज्ञान प्रभु जी पाये, समवशरण सुर नाथ रचाए ॥5॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूनम चैत शुक्ल की आई, पद्मप्रभु तीर्थकर भाई ।

सारे कर्म घातिया नाशे, क्षण में केवलज्ञान प्रकाशे ॥6॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्ठी फाल्गुन की अंधियारी, चार घातिया कर्म निवारी ।

जिन सुपार्श्व ने ज्ञान जगाया, इस जग को संदेश सुनाया ॥7॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन कृष्ण की सातें आई, चन्द्रप्रभु तीर्थकर भाई ।

कर्मघातिया चार विनाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे ॥8॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कार्तिक शुक्ल दोज पहिचानो, पुष्पदंत तीर्थकर मानो ।

केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, समवशरण तब इन्द्र बनाए ॥9॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष कृष्ण की चौदश आई, शीतलनाथ जिनेश्वर भाई ।

बने उसी दिन केवलज्ञानी, ज्ञान सुधामृत के वरदानी ॥10॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चामर छंद)

माघ कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम् ।

श्री श्रेयांस तीर्थेश, आप हुए सुमंगलम् ॥

कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम् ।

दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम् ॥11॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ माह शुक्ल पक्ष, दोज पाए मंगलम् ।

श्री जिनेन्द्र वासुपूज्य, आप हुए सुमंगलम् ॥

कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम् ।

दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम् ॥12॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ माह शुक्ल पक्ष, तिथि षष्ठी मंगलम् ।

श्री जिनेन्द्र विमलनाथ, ज्ञान रूप मंगलम् ॥

कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम् ।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम् ॥13॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला षष्ठ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम् ।
श्री जिनेन्द्र अनंतनाथ, ज्ञान रूप मंगलम् ॥
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम् ।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम् ॥14॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

(छंद-हरिगीता)

पौष शुक्ला पूर्णिमा को, हुए मंगलकार हैं ।
धर्म जिन तीर्थेश ज्ञानी, कर्म घाते चार हैं ॥
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं ।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं ॥15॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष शुक्ला तिथि दशमी, शांति जिन तीर्थेश जी ।
ज्ञान केवल प्राप्त कीन्हें, दिए शुभ संदेश जी ॥
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं ।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं ॥16॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला दशम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत्र शुक्ला तीज स्वामी, कुंथु जिन तीर्थेश जी ।
ज्ञान केवल प्राप्त कीन्हें, दिए शुभ संदेश जी ॥
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं ।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं ॥17॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वादशी कार्तिक सुदी की, कर्म नाशे चार हैं ।
जिन अरह तीर्थेश ज्ञानी, हुए मंगलकार हैं ॥
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं ।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं ॥18॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष कृष्णा दूज मल्लि, नाथ जिनवर ने अहा ।
कर्मघाती नाश करके, ज्ञान पाया है महा ॥
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं ।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं ॥19॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वैशाख कृष्णा तिथि नौमी, मुनिसुव्रत तीर्थेश जी ।
ज्ञान केवल प्राप्त करके, दिए प्रभु संदेश जी ॥
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं ।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं ॥20॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा नवम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मगसिर शुक्ला तिथि ग्यारस, नमी जिनवर ने अहा ।
कर्मघाती नाश कीन्हें, ज्ञान पाया है महा ॥
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं ।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं ॥21 ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अश्विन शुक्ला तिथि एकम्, नेमि जिन तीर्थेश जी ।
ज्ञान केवल प्राप्त करके, दिए शुभ संदेश जी ॥
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं ।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं ॥22 ॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत्र कृष्णा चौथ पावन, पार्श्व जिनवर ने अहा ।
कर्मघाती नाश करके, ज्ञान पाया है महा ॥
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं ।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने आए हैं ॥23 ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वैशाख शुक्ला तिथि दशमी, वीर जिन तीर्थेश जी ।
ज्ञान केवल प्राप्त करके, दिए शुभ संदेश जी ॥
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं ।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने आए हैं ॥24 ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- केवलज्ञानी बन गये, तीर्थकर चौबीस ।
पूजा करके भाव से, चरण झुकाते शीश ॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानकल्याणकसहित श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो पूर्णाघ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप्य मंत्रःह्रत् ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणक पदालंकृत चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नमः ।

जयमाला

दोहा- पूज्य हुए तिय लोक में, जिन चौबीस त्रिकाल ।
पाये केवलज्ञान शुभ, गाते हम जयमाल ॥

(चाल-टप्पा)

ज्ञानावरणी नाश हुए प्रभु, त्रिभुवन के स्वामी ।
पाकर केवलज्ञान बने हैं, मुक्ति पथगामी ॥

जिनेश्वर हे अंतर्दामी.....
केवलज्ञान प्राप्त कर भगवन्, बने मोक्षगामी ॥ जि.

सम्यक्दर्शन चतुर्गति में, पाते हैं प्राणी ।
श्री जिनेन्द्र ने कथन किया यह, कहती जिनवाणी ॥

जिनेश्वर हे अंतर्दामी !.....

निज आतम की शक्ति जग में, जिसने पहिचानी ।
सम्यक्दृष्टि देवशास्त्र गुरु, के हो श्रद्धानी ॥

जिनेश्वर हे अंतर्दामी !.....

सम्यक्दर्शन पाने वाले, हों सम्यक्ज्ञानी ।
द्रव्य भाव श्रुत के ज्ञाता फिर, बनते निजध्यानी ॥

जिनेश्वर हे अंतर्दामी !.....

अनुक्रम से बन जाते हैं फिर, चारित्र के स्वामी ।
रत्नत्रय को पाने वाले, मुक्ति पथगामी ॥
जिनेश्वर हे अंतर्दामी !.....

क्षपक श्रेण्यारोहण करके, बनते निज ध्यानी ।
ज्ञानावरणी कर्म नाश वह, हों केवलज्ञानी ॥
जिनेश्वर हे अंतर्दामी !.....

अनंत चतुष्टय पाने वाले, इस जग के स्वामी ।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाले, हों त्रिभुवन नामी ॥
जिनेश्वर हे अंतर्दामी !.....

ज्ञानकल्याणक की महिमा को, कहे कौन ज्ञानी ।
त्रिभुवनपति के द्वारे आकर, झुकते सब मानी ॥
जिनेश्वर हे अंतर्दामी.....

ज्ञान विशद हम पाने आये, हे जिनवर स्वामी ।
विनती मम स्वीकार करो अब, हे शिवपुर गामी ॥
जिनेश्वर हे अंतर्दामी.....

दोहा- ज्ञान कल्याणक की रही, महिमा अपरम्पार ।
केवलज्ञानी जीव इस, जग से होते पार ॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानकल्याणक सहित श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जयमाला पूर्णाघ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- अंतिम है यह भावना, विशद पाऊँ मैं ज्ञान ।
भवसागर से शीघ्र ही, हो मेरा कल्याण ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तीर्थकर मोक्ष कल्याणक पूजा

स्थापना

ऋषभादि चौबीस जिनेश्वर ने कर्मों का किया विनाश ।
महा मोक्षफल पाकर प्रभु ने, सिद्धशिला पर कीन्हा वास ॥
परम मोक्षकल्याणक की हम, करते भाव सहित पूजन ।
अपने उर के कमलासन पर, करते प्रभु का आह्वान ॥
हे प्रभु ! हमारी विनती को, स्वीकार करो उर में आओ ।
हम भूल रहे हैं मोक्षमार्ग, वह मार्ग हमें प्रभु दिखलाओ ॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र अवतर अवतर
संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
स्थापनं ।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकर समूह ! अत्र मम् सन्निहितो
भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

गीता छंद

हम शुभ भावों के निर्मल जल से, जन्म-मरण का नाश करें ।
मिथ्यात्व नाश करके अनुपम, सम्यक् श्रद्धान विकास करें ॥
यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे ।
जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे ॥१॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम शुभ भावों का चंदन लेकर, भव आताप विनाश करें ।
अज्ञान तिमिर हो नाश प्रभु, निज सम्यक्ज्ञान प्रकाश करें ॥

यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।

जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे ॥2॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शुभ भावों के अक्षत से, प्रभु अक्षय पद को प्राप्त करें।

हम मोह महातम से बचकर, सम्यक्चारित्र विकास करें ॥

यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।

जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे ॥3॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्योऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम पुष्प चढ़ाकर भाव सहित, अब कामवासना नाश करें।

शुभ संयम तप की शक्ति से, निज आतम तत्त्व प्रकाश करें ॥

यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।

जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे ॥4॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस अर्पित करके, हम क्षुधा व्याधि का हास करें।

निज वीर्याचार प्रकट करके, भोजन संज्ञा का नाश करें ॥

यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।

जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे ॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम दीप समर्पित करके शुभ, प्रभु मोह अंध का नाश करें।

हो भय संज्ञा का पूर्ण नाश, निर्भय हो निज में वास करें ॥

यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।

जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे ॥6॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म की धूप जला, प्रभु आठों कर्म विनाश करें।

मैथुन संज्ञा पर विजय करें, अरु परम ब्रह्म में वास करें ॥

यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।

जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे ॥7॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शुभ भावों के फल लेकर, परिग्रह संज्ञा का नाश करें।

शुभ मोक्ष महाफल पाकर के, हम सिद्ध शिला पर वास करें ॥

यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।

जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे ॥8॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाकर भावों से, सब राग-द्वेष का नाश करें।

पाकर अनर्घ पद सर्वश्रेष्ठ, चेतन स्वभाव में वास करें ॥

यह मोक्ष महाकल्याणक है, जीवों को मुक्ति प्रदान करे।

जो मोक्ष महल में जीवों को, आने का शुभ आह्वान करे ॥9॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा- तीर्थकर पाते सभी, परम सुपद निर्वाण।

केवलज्ञानी जो बनें, करते मोक्ष प्रयाण ॥

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चाल-छंद

वदी माघ सुचौदश जानो, जिन ऋषभनाथ पहिचानो।

कैलाशगिरि से भाई, प्रभुवर ने मुक्ति पाई ॥

प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते ।
हम मोक्ष कल्याणक पाएँ, बस यही भावना भाएँ ॥1१॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

सुदि चैत्र पञ्चमी जानो, सम्मेद शिखर से मानो ।
अजितेश जिनेश्वर भाई, शुभ घड़ी में मुक्ति पाई ॥
प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते ।
हम मोक्ष कल्याणक पाएँ, बस यही भावना भाएँ ॥12॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्ठी सुदि चैत्र की आई, सम्मेद शिखर से भाई ।
संभव जिन मुक्ति पाए, हम चरणों शीश झुकाए ॥
प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते ।
हम मोक्ष कल्याणक पाएँ, बस यही भावना भाएँ ॥13॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

(चौपाई)

षष्ठी शुक्ल वैशाख पिछानो, सम्मेदाचल गिरि से मानो ।
अभिनंदन जिन मुक्ति पाए, कर्म नाशकर मोक्ष सिधाए ॥14॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत सुदी एकादशी आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई ।
सुमतिनाथ जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ति पाए ॥15॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो ।
पद्मप्रभु जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ति पाए ॥16॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

गीता छंद

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी को, जिन सुपारसनाथ जी ।
मोक्ष गिरि सम्मेद गिरि से, पाए मुनि कई साथ जी ॥
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से ।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से ॥17॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ शुक्ल फाल्गुन सप्तमी, सम्मेदगिरि से ध्यान कर ।
श्री चन्द्रप्रभु जी मोक्ष पहुँचे, जगत् का कल्याण कर ॥
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से ।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से ॥18॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमी शुभ भाद्र शुक्ला, सम्मेदगिरि से ध्यान कर ।
पुष्पदंत जिन मोक्ष पहुँचे, जगत् का कल्याण कर ॥
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से ।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से ॥19॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अश्विन शुक्ला अष्टमी जिन, श्री शीतलनाथ जी ।
मोक्ष गिरि सम्मेद से, पाए कई मुनि साथ जी ॥
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से ।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से ॥10॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्णमासी माह श्रावण, सम्मेदगिरि से ध्यान कर ।
श्रेय जिन स्वधाम पहुँचे, जगत् का कल्याण कर ॥
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से ।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से ॥11॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र चौदश, भाद्रपद शुक्ला परम ।
मंदारगिरि से कर्म नाशे, लक्ष्य पाये जो चरम ॥
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से ।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से ॥12॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्ला चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(शम्भू छंद)

विमलनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ ।
कृष्ण पक्ष आठें आषाढ़ की, बने आप शिवपुर के नाथ ॥
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी ।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी ॥13॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री अनंत जिन चैत अमावस, मोक्ष कई मुनियों के साथ ।
गिरि सम्मेद शिखर से भगवन्, बने आप शिवपुर के नाथ ॥
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी ।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी ॥14॥

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल पक्ष की, धर्मनाथ जिनवर स्वामी ।
गिरि सम्मेद शिखर से जिनवर, बने मोक्ष के अनुगामी ॥
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी ।
हमको मुक्तिपथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी ॥15॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, जिनवर शांतिनाथ भगवान ।
गिरि सम्मेद शिखर से अनुपम, पाए हैं शुभ पद निर्वाण ॥
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी ।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी ॥16॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

कुंथुनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ ।
एकम् सुदी वैशाख माह को, बने आप शिवपुर के नाथ ॥
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी ।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी ॥17॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत कृष्ण की तिथि अमावस, गिरि सम्मेदशिखर शुभ धाम ।
अरहनाथ जिन मोक्ष पधारे, तिनके चरणों करूँ प्रणाम ॥
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्दामी ।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम पथगामी ॥18॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

(छंद-विष्णु पद) तर्ज- कहा गये चक्री....

फाल्गुन शुक्ला तिथि पञ्चमी, मल्लिनाथ स्वामी ।
गिरि सम्मेदशिखर से जिनवर, बने मोक्षगामी ॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए ।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए ॥19॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

गिरि सम्मेद शिखर से जिनवर, मुनिसुव्रत स्वामी ।
कृष्ण पक्ष फाल्गुन की बारस, बने मोक्षगामी ॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए ।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए ॥20॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चतुर्दशी वैशाख कृष्ण की, नमीनाथ स्वामी ।
मोक्ष गये सम्मेद शिखर से, जिन अंतर्दामी ॥

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए ।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए ॥21॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

सार्ते शुक्ल आषाढ़ माह की, नेमिनाथ स्वामी ।
ऊर्जयन्त से मोक्ष पधारे, जिन अंतर्दामी ॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए ।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए ॥22॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रावण शुक्ला तिथि सप्तमी, पार्श्वनाथ स्वामी ।
गिरि सम्मेद शिखर से भगवन्, बने मोक्षगामी ॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए ।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए ॥23॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

कार्तिक कृष्णा तिथि अमावस, महावीर स्वामी ।
पद्म सरोवर पावापुर से, बने मोक्षगामी ॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए ।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए ॥24॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऋषभादि चौबीस जिनेश्वर, ने पाया है केवलज्ञान।
अनुपम दिव्य देशना देकर, किया जगत का है कल्याण॥
शुद्ध ध्यान अग्नि में तपकर, अष्ट कर्म का किया विनाश।
मोक्ष प्राप्त करके अनुक्रम से, सिद्ध शिला पर कीन्हा वास॥25॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकसहित श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य मंत्रः॥ ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक पदालंकृत श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- तीर्थकर तिय लोक में, होते पूज्य त्रिकाल।
मोक्ष कल्याणक की यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

बेसरी छंद

काल अनादि यह कहलाया, इसका अंत कहीं न पाया।
जीव अनंतानंत कहे हैं, भवसागर में दुःख सहे हैं।
जन्म-मरण पाते दुखदायी, राग-द्वेष के कारण भाई।
कर्म बंध होता है भारी, जिससे है संसार दुखारी।
भव्याभव्य कहे हैं प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।
भव्य मोक्ष की शक्ति पाते, इतर सदा संसार भ्रमाते।
सम्यक्श्रद्धा जिनके जागे, मोक्षमार्ग में वो ही लागे।
मोक्षमार्ग रत्नत्रय जानो, वीतरागता भी पहिचानो।
जो हैं वीतरागता धारी, वह हो जाते हैं अविकारी।
निज आत्म का ध्यान लगाते, जिससे कर्म निर्जरा पाते।
सर्व कर्म नशते ही प्राणी, पा लेते हैं मुक्ति रानी।
इन्द्र सभी मिलकर के आते, मोक्षकल्याणक वहाँ मनाते।

अष्ट द्रव्य से पूजा करते, अपना कोष पुण्य से भरते।
भक्ति करते विस्मयकारी, सर्व जगत् में मंगलकारी।
अग्नि कुमार देव भी आते, भक्ति से नख केश जलाते।
जयकारा करते हैं भारी, प्रभु होते हैं अतिशयकारी।
हम भी यही भावना भाते, जिन चरणों में शीश झुकाते।
मुक्ति वधू को हम पा जाएँ, भवसागर में नहीं भ्रमाएँ।

दोहा- भाते हैं यह भावना, हे शिवपुर के नाथ।
मोक्ष प्राप्त हम भी करें, कभी न छूटे साथ॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकसहित श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- श्रेष्ठ मोक्ष कल्याण, वीतरागता से मिले।
जिन का यही विधान, और कोई विधि है नहीं॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप : ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष पंचकल्याणक पदालंकृत
त्रिकालवर्ती श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- पञ्च कल्याणक पूज्य हैं, तीनों लोक त्रिकाल।
अतः भाव से गा रहे, उनकी हम जयमाल॥

(चाल-टप्पा)

तीर्थकर प्रकृति प्रगटाए, प्रबल पुण्यधारी।
तीन लोक की प्रभुता पाए, जग मंगलकारी।
जिनेश्वर हैं अतिशयधारी।

महिमा का नहीं पार लोक में, है विस्मयकारी। जि.

तीर्थकर के पादमूल में, कर भक्ति भारी।
 तीर्थकर प्रकृति बंधती, है शुभ महिमाधारी॥ जिनेश्वर हैं...
 गर्भ के छह महीने पूरव से, रत्नवृष्टि भारी।
 धन कुबेर आदि होते हैं, इसके अधिकारी॥ जिनेश्वर हैं...
 पाण्डुक शिला पर मेरुगिरि पे न्हवन समय की, महिमा है न्यारी।
 क्षीर सागर से जल लाते हैं, देव ऋद्धिधारी॥ जिनेश्वर हैं...
 कर्मघातिया नाश बनें फिर, विशद ज्ञानधारी।
 अनंत चतुष्टय पाने वाले, होते अनगारी॥ जिनेश्वर हैं...
 आठ कर्म का नाश करें फिर, होते शिवकारी।
 सिद्ध शिला पर अधर विराजे, सर्व सौख्यकारी॥ जिनेश्वर हैं...
 पञ्च कल्याणक की पूजा है, अति महिमाकारी।
 पूजा करके पुण्य कमाते, जग के नर-नारी॥ जिनेश्वर हैं...
 मन में मेरे लगन लगी है, भक्ति की भारी।
 'विशद' भावना भाते हैं हम, बनें ज्ञानधारी॥ जिनेश्वर हैं...

सोरठा

कल्याणक यह पाँच, अनुक्रम से पाते प्रभु।

मिटती भव की आंच, परम सिद्ध पद प्राप्त हो॥

ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-केवलज्ञान-मोक्ष पंचकल्याणक पदालंकृत श्री चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कल्याणक के भाव से, पूजा की इह आन।

हमको मुक्ति प्राप्त हो, होय जगत् कल्याण॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आरती

(तर्ज- जय-2 गुरुवर भक्त...)

पञ्च कल्याणक की अनुपम शुभ, आरती मंगल गाते।
 कल्याणक हों हमें प्राप्त शुभ, विशद भावना भाते॥
 जिनवर के चरणों में नमन्-2 प्रभुवर.....
 तीर्थकर प्रकृति के धारी, गर्भ कल्याणक पावें।
 इन्द्र रत्न वृष्टि करके शुभ, मन में अति हर्षावें॥
 स्वर्ग लोक के इन्द्र सभी मिल-2, गीत भक्ति के गाते। कल्याणक हों...
 जन्म कल्याणक के अवसर पर, इन्द्र ऐरावत लावे।
 पाण्डुक शिला पे क्षीर नीर से, अतिशय न्हवन करावे॥
 दाएँ पग में चिह्न देखकर, नामकरण कर पाते। कल्याणक हों...
 देख दशा संसार वास की, पूर्ण विरक्ति पावें।
 पञ्च महाव्रत धारण करके, संयम भाव जगावें॥
 पञ्च मुष्टि से केशलुंच कर, जैन मुनि बन जाते। कल्याणक हों...
 ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवलज्ञान जगावें।
 समवशरण की रचना करने, देव स्वर्ग से आवें॥
 श्री जिनवर के समवशरण में, भव्य जीव जा पाते। कल्याणक हों...
 दिव्य देशना खिरती प्रभु की, जग में मंगलकारी।
 गणधर उसे झेलने वाले, होते हैं उपकारी॥
 प्राणी सुनकर सम्यक्दर्शन, कई संयम को पाते। कल्याणक हों...

प्रशस्ति

दोहा- पञ्च कल्याणक की विशद, पूजा रची महान्।
 है अंतिम यह भावना, पाऊँ पद निर्वाण ॥

लोकालोक रहा मनहार, मध्यलोक है मंगलकार।
 भरत क्षेत्र में भारत देश, राजस्थान है श्रेष्ठ प्रदेश ॥1॥

राजधानी जयपुर है नाम, रहा ऋषि मुनियों का धाम।
 बस्सी नगर है जिसके पास, जिसमें है जैनों का वास ॥2॥

नगर बीच हैं मंदिर तीन, भाई मन में करो यकीन।
 पार्श्वनाथ का मंदिर खास, जिसमें करते संत निवास ॥3॥

ग्रीष्मकाल का हुआ प्रवास, बना वहाँ पर नव इतिहास।
 मंदिर में कर जीर्णोद्धार, बना वहाँ पर नव आकार ॥4॥

वेदी प्रतिष्ठा हुई विशेष, बैठे वेदी में तीर्थेश।
 माह आषाढ़ कृष्ण की दोज, श्रीजी बैठे इस ही रोज ॥5॥

पञ्च कल्याणक लिखा विधान, कीन्हा जिनवर का गुणगान।
 कार्य पूर्ण कर लिया विराम, लेखन से पाया विश्राम ॥6॥

भक्ति का लेकर आधार, शुभ भावों का पाने सार।
 लघु धी से यह कार्य महान्, जिनवर का करने गुणगान ॥7॥

जिन गुरु का पाकर आशीष, चरण झुकाए बालक शीश।
 पूरी होवे मेरी आस, भेद ज्ञान पाऊँ मैं खास ॥8॥

आत्म तत्त्व का होय प्रकाश, अष्ट कर्म का होवे नाश।
 हमको है पूरा विश्वास, होगा मम् शिवपुर में वास ॥9॥

दोहा- पंच कल्याणक पूजकर, होय विशद कल्याण।
 गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, अंतिम हो निर्वाण ॥

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
 श्री गुरुवर के दर्शन करने से, हृदय कमल खिल जाते हैं ॥
 गुरु आराध्य हम आराधक, करते हैं उर से अभिवादन।
 मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वान ॥
 ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्
 अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
 रागद्वेष की वैतरणीं से, अब तक पार न पाया है ॥
 विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
 भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं ॥
 ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय
 जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
 कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं ॥
 विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
 संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं ॥
 ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं
 निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
 अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं ॥
 विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
 अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं ॥

ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान्
निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।

काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।
ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं
निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं।

ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।

मोह अंध का नाश करो, मम दीप जलाने आये हैं।
ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं
निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपना था।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं।

ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति
स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।

मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।
ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम्
निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ्य समर्पित करते हैं।

पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।
ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला।

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।

आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा ॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं १८ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्य
निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।

मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

:— अर्थ सौजन्य :—

1. श्री दिगम्बर जैन महिला मण्डल जूनियाँ
2. श्री पदमचन्द जी मैनेजर साहब, जूनियाँ
3. श्री विनोद कुमार जी लावरीया, जूनियाँ
4. श्री रामेश्वरलालजी सुरेशजी लावरीया, जूनियाँ
5. श्री पदमचन्दजी राकेशकुमारजी लावरीया, जूनियाँ
6. श्री माणकचन्दजी भँवरलालजी लावरीया, जूनियाँ
7. श्री शांतिलालजी राजकुमारजी ठेंग्या, जूनियाँ
8. श्री नन्दलालजी भँवरलालजी चोरूका, जूनियाँ
9. श्री कैलाशचन्दजी महावीरप्रसादजी लावरीया, जूनियाँ
10. श्रीमती शांतिबाई कासलीवाल, जूनियाँ
11. श्री गोपीलालजी ज्ञानचन्दजी चोरूका, जूनियाँ
12. श्री मिलापचन्दजी महावीरजी चोरूका, जूनियाँ
13. श्री मनोहरलालजी नरेन्द्रकुमारजी जैन, जूनियाँ
14. श्री समीरमलजी इन्दरमलजी लावरीया, जूनियाँ
15. श्री ताराचन्दजी धन्नलालजी लावरीया, जूनियाँ
16. श्रीमती सीतादेवी अमरचंद जैन, केकड़ी
17. श्री अशोककुमार जैन रांका, केकड़ी